।। द्वितीयोऽध्यायः।।

4.5.0 अयोध्यातीर्थप्रशंसायाः विषयानुक्रमणिका

(1) मार्कण्डेयस्य राज्ञश्च संवादोपक्रमः	— 1-4	श्लोकेषु
(2) अयोध्यातीर्थानां माहात्म्योपक्रमः	— 5-6	श्लोकयोः
(3) गोप्रतारमाहात्म्यम्	— 7-11	श्लोकेषु
(4) तिलोदकीतीर्थमाहात्म्यम्	— 12	श्लोके
(5) अग्नितीर्थमाहात्म्यम्	— 13-15	श्लोकेषु
(6) बृहस्पतिकुण्डमाहात्म्यम्	— 16-20	श्लोकेषु
(7) ब्रह्मकुण्डमाहात्म्यम्	— 21-26	श्लोकेषु
(8) कोटितीर्थमाहात्म्यम्	— 27-29	श्लोकेषु
(9) सप्तर्षितीर्थमाहात्म्यम्	— 30	श्लोके
(10) स्वर्गद्वारमाहात्म्यम्	— 31-39	श्लोकेषु
(11) सरयूघर्घरासंगमतीर्थमाहात्म्यम्	— 40	श्लोके
(12) बाल्यखिल्याश्रमतीर्थमाहात्म्यम्	— 41	श्लोके
(13) बिल्वतीर्थमाहात्म्यम्	— 42	श्लोके
(14) गालवतीर्थमाहात्म्यम्	— 42	श्लोके
(15) रामतीर्थमाहात्म्यम्	— 44	श्लोके
(16) जटाकुण्डतीर्थमाहात्म्यम्	— 45	श्लोके
(17) उपसंहारः, फलश्रुतिश्च	— 46	श्लोके

इति अनुक्रमणिका।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अयोध्यातीर्थप्रशंसा

शृणुष्वा 'वहितो ब्रह्मन् वचनं मे भृगू'त्तम।
यद्वदामि मुनिश्रेष्ठ तत् सर्व्वं क्षन्तु 'महींसि ॥1॥

अर्थः—(राजा ने कहा–) हे भृगुवंशियों में श्रेष्ठ मार्कण्डेय जी! हे ब्रह्मन्! आप सावधान होकर मेरी बात सुनें। हे मुनिश्रेष्ठ! जो मैं कहता हूँ, उसे आप क्षमा करेंगे।

पाठान्तरम्—श्लो.1–4? B M [मित्रमिश्रेण, डॉ. बाकरेण च एते श्लोकाः न उद्धृताः] /a) शृणुष्वा० R, शृणुष्व० s / d) सर्व्वं R, सर्वं S ।

रामस्य चरितं पुण्यं त्वया प्रो'क्तं ममा' धुना ॥2॥

अर्थः— अभी आपने मुझे राम का पुण्य चरित्र सुनाया है।

तस्य रामस्य देवस्य पुरी रम्या सुशोभना।
सरयू–तीर–संभूता अयोध्ये'ति जनैः श्रुता ॥3॥

अर्थः—उस रामदेव की सरयू नदी के तट पर उत्पन्न (विद्यमान) तथा लोगों द्वारा अयोध्या इस नाम से विख्यात अत्यन्त सुन्दर एवं रमणीय नगरी है।

पाठान्तरम्—श्लो. 2, 3–?–B M ।

तस्यां पुर्यां अनेकानि तीर्थानि मुनिसत्तम।
तान्य'हं श्रोतु'मिच्छामि त्वत्तः विप्रें'द्र भो'धुना॥4॥

अर्थः—हे मुनिश्रेष्ठ! (मार्कण्डेयजी) उस नगरी में अनेक तीर्थ हैं। हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! उन तीर्थों को मैं आप (के मुखारविन्द) से सुनना चाहता हूँ।

पाठान्तरम्—श्लो. 4? B M / a) पुर्यां O [असन्धितपाठविषये पाठविचारे द्रष्टव्यम्] । d) त्वत्तः=त्वंतः R, त्वं ब्रूहि S, त्वत्तः ∃ यि RS¹ । भो= मे RS [RS योः समर्थितस्य 'त्वत्तः' पाठस्य अनुरोधेन अयं निर्माणपाठः, भो > मे→ 'ब्रूहि··· मे']।

॥ मार्क्कण्डेय उवाच ॥

शृणु राजें'द्र वक्ष्यामि तीर्थानि विविधानि च।
अयोध्यायां सुपुण्यानि सद्यः पापहराणि वै ॥5॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

।। मार्कण्डेय (जी) बोले।।

अर्थः—हे राजन्! अयोध्या में अत्यन्त ही पवित्र तथा शीघ्र ही पापों को नष्ट कर देने वाले अनेक तीर्थ हैं, उन्हें मैं कहता हूँ, आप सुने।

पाठान्तरम्— –?B [बाकरेण न उद्धृतम्]। मार्क्क० RS M। –?– B/a) राजेन्द्र O, राजन् प्र० M / d) हरानि RS।

न विस्तरेण शक्तिर् मे वक्तुं'मस्ति महामते।
संक्षेपात् कथयिष्यामि कानिचित् प्रथितानि वै।।6।।

अर्थः—हे महामते! उन तीर्थों को विस्तार से कहने की शक्ति मुझमें नहीं है। कुछ प्रसिद्ध तीर्थों को ही मैं आपसे संक्षेप में कहूँगा।

पाठान्तरम्— –?–B/ 6c-11 b⊙RS° [दृष्टिप्लुतिः? , एतेन RS योः सनाभिता सिद्धा]।

यत्र रामो नरव्याघ्रः पद्मपत्रायते 'क्षणः।
कृमिकीटपतंगाद्यैर् जनैस् स्नात्वा जनार्दनः।।7।।

अर्थः— (सातवें, आठवें और नवें पद्यों की क्रिया एक है 'पदं प्राप्तवान्' अतः इन तीनों का अन्वय एक साथ करें। यहाँ **'संदानितक'** नामक पद्य है।

जहाँ पद्मपत्र की तरह दीर्घ नेत्रों वाले पुरुषर्व्याघ्र राम लोगों के साथ स्नान कर कृमि–कीट–पतंगादि सहित (अपने पद को प्राप्त किये)।

पाठान्तरम्— –⊙–RS°/a) व्याघ्र B / d) जनैः=जनैस्, जनै S+B [जनैः > जनै (श्रुतलेखनजन्यप्रमादः?) →जनैः, अतो हि निर्माणपाठः]।

शंखदुंदुभिनिर्घोषैः स्तूयमानो 'प्सरोगणैः।
दिव्यैः सें'द्रैश् च रुद्रैश् च गंधर्वैः किन्नरैस् तथा ।।8।।

अर्थः—इन्द्र सहित रुद्रों, दिव्यगणों, गन्धर्वों, किन्नरगणों तथा अप्सराओं द्वारा शंख और दुंदुभि की ध्वनि से स्तुति किये जाते हुए (अपने पद को प्राप्त किये।)।

पाठान्तरम्— –⊙–RS°/ 6) Sप्सरो M/ c–d) दिव्यैः O, देवैः S+/ सेंत्रैः S+/ सेंद्रैश् च रुद्रैश् च गंधर्वैः किन्नरैस्=सेन्द्रैः सरुद्रैश् च गंधर्वैः किन्नरैस् M, सेंत्रैः मुर्नी–द्रैश् च गंधर्वैः किन्नरैस् S+, सेन्द्रैश्च गंधर्वैः किन्नरैर् गुह्यकैः B [सरुद्रैश्च >⊙ द्विधा पूर्तिः, BS योः इयमेव व्याख्या 'मुर्नीद्रै' इति मूलपाठे अपि सम्भाव्यते। किन्तु 'सैद्रैः' अत्र विसर्गैः निर्णयः, 'मुर्नीद्रैः' मूलपाठे तु 'र' इति अभविष्यत, M कोशः प्राचीनः अपि]।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिव्यं विमान 'मास्थाय स्वपदं प्राप्तवान् हरिः।
गोप्तार 'मिति तं विद्धि तीर्थाना 'मुत्तमं पदं ॥9॥

अर्थः— दिव्य विमान पर विराजमान होकर श्रीहरि (राम) जहाँ से अपने परम धाम को प्राप्त किये, उसे तीर्थों में उत्तम तीर्थ गोप्रतार नामक स्थान जानो।

पाठान्तरम्— -⊙-RS°/ a) विमानमा॰ O, विमानास्थाय B /b) प्राप्तवान् च पदं हरिः S+ /C) गोप्रतारम् M [अधिकाक्षरमत्र, लोके 'गोप्तार' गुप्तार' वा नाम्ना विख्यातम्, 'गोप्रतार' इति संस्कृताकरणस्य चेष्टा; स तु अपपाठः छन्दोभंगत्वात्, द्र. भूमिका]। इति तं विद्धि O, एतत् S+ [न्यूनाक्षरम्] । d) पदं O, परं S+ ['परं' इति वा मूलपाठः?] ।

तस्य पुण्यफलं यत् स्यात् तच्छृणुष्व महामते ॥10॥

अर्थः— हे महामते! उस गोप्रतार तीर्थ का जो पुण्यफल है उसे (मैं कहता हूँ) आप सुने।

पाठान्तरम्— -⊙-RS°/a) यत् स्यात् O, यस्मात् S+ /b) छ्रणुष्व O, छ्रश्चS+, छुष्व B ।

गवां सहस्रं यो दद्याद् ब्राह्मणेभ्यो महामते।
कुरुक्षेत्रे महापुण्ये राहुग्रस्ते दिवाकरे।
देववत्से तदा'प्नोति गोप्तारे स्नानकृन्नरः ॥11॥

अर्थः—हे महामते! राहु के द्वारा सूर्य के ग्रस्त कर लेने अर्थात् सूर्यग्रहण के समय पुण्यकाल के अवसर पर कुरुक्षेत्र में असंख्य गौवों के दान करने का जो फल होता है वह फल गोप्रतार तीर्थ के देववत्स नामक स्थान में स्नान करने से प्राप्त होता है।

पाठान्तरम्—ab-⊙RS+/ C) °पुण्ये O, पुत्रे B/e) देववत्से तदा° O, देवत्वं स तदा° B, तत्फलं समवा॰ M [पाठयोजना अशक्त्या सरलीकरणस्य प्रयासः। 'देववत्से' इति गोप्रतारस्य विशेषणं, तदन्तर्गतः तीर्थविशेषो वा। अथ वा यस्माद् ग्रन्थाद् अयोध्यातीर्थप्रशंसा नरसिंहपुराणे आनीता, तस्य ग्रन्थस्य वक्तृश्रोतृसंवादे 'देववत्से' इति सम्बोधनम्] द्र. भूमिका। गोप्रतारे M [अधिकाक्षरम्] द्र. उपरिष्टात्।

श्लो. 11 ∃ 'इति। तथा गोप्रतारमधिकृत्य महाभारते—

तस्मिंस्तीर्थे नरः स्नात्वा गोप्रतारे नराधिपः।
सर्वपापविशुद्धा'त्मा सर्वपापैः प्रमुच्यते॥ M

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थः—यह पद्य महाभारत का प्रक्षिप्त है। इसमें गोप्रतार के ही सम्बन्ध में कहा गया है कि–हे नराधिप! उस गोप्रतारतीर्थ में स्नान करके मनुष्य समस्त पापों से विशुद्धात्मा होकर सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

टिप्पणी—[अयं श्लोकः महाभारतस्य वनपर्वणः उद्धृतः, अग्रिमैः श्लोकैः अस्य न सम्बन्धः, अत्र डॉ. बाकरः भ्रान्तः]।

ततस् तिलोदकं नाम सदा ब्रह्मर्षि–सेवितं।
ततः स्नात्वा 'र्च्चयित्वा च विष्णुलोक.'मवाप्नुयात्।।12।।

अर्थः— गोप्रतार तीर्थ के अनन्तर सदा ही ब्रह्मर्षियों द्वारा सेवित तिलोदक नामक तीर्थ है। फिर वहाँ तिलोदक तीर्थ में स्नान करके और तत्रस्थ देवताओं की पूजा करके मनुष्य विष्णुलोक को प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— a) तिलोदकं O, तेलोकं B [ति>ते' अनेन मूलग्रन्थे पृष्ठमात्राः, बाङ्ला लिपिः वा, प्रयुक्ता इति अनुमीयते] c) ततस्= ततः B, तत R, तत्र M [ततस् स्ना°>तत स्ना° (श्रुतलेखनजन्यप्रमादः?) → (i) ततः, (ii) तत्र] अर्च्च० O, अर्च० MB।

चक्रतीर्थे ततस् स्नात्वा पीत्वा तज्जल 'मुत्तमं।
सर्वपापैर् विनिर्म्मुक्तः सर्वदेवैश् च पूजितः।।13।।

अर्थः—इसके बाद वह चक्रतीर्थ में स्नान कर के और उस तीर्थ के उत्तम जल को पीकर मनुष्य सभी प्रकार के पापों से विनिर्मुक्त और सभी देवों से पूजित होकर (विष्णुपुर को प्राप्त करता है)।

पाठान्तरम्— a) ततः=तत R S B, नरः M [ततः > तत श्रुतलेखनजन्यप्रमादः, B कोशस्य मूले अपि द्वित्वप्रवृत्तिः सिद्धा]। c) विनिर्म्मुक्तः BM।

दिव्यं विमान 'मास्थाय पुरंदरपुरं व्रजेत्।
तत्र भुक्त्वा बहून् भोगान् पुनर्विष्णुपुरं व्रजेत्।।14।।

अर्थः—दिव्य विमान पर बैठकर इन्द्रलोक (अमरावती) में जाता है तथा वहाँ बहुत प्रकार के भोगों को भोगकर पुनः विष्णु लोक में चला जाता है। (यहाँ तेरहवें और चौदहवें पद्यों की क्रिया एक होने से युग्मक नामक पद्य समझना चाहिये। साथ ही यहाँ क्रिया विधि लिंग की होने से 'जावें या जाना चाहिये' अर्थ होगा, किन्तु मैंने उपर्युक्त अर्थ माहात्म्य कथन की दृष्टि से किया है।)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठान्तरम्— b) पुरन्धर B / cd ⊙ R S [दृष्टिप्लुतिः–? अन्यदिव्यलोकेभ्यः पुनः वैकुण्ठं गमनमेव – तुल. श्लो. 18,19] ।

अग्नितीर्थे नरः स्नात्वा नरसिंहं च पूजयेत्।
अग्निरूपान्वितो भूत्वा परां गतिं 'मवाप्नुयात्॥15॥

अर्थः— अग्नितीर्थ में मनुष्य स्नान करके नरसिंह भगवान की पूजा करे तथा अग्निरूप होकर परमोत्कृष्ट गति को प्राप्त करे।

पाठान्तरम्— a) अग्नितीर्थे O, चक्रतीर्थे R S /नरः B M, नर R S, [तुल. 13a इत्यादिकम्] b) नरसिंहश् R S [R S योः अत्यन्तं सनाभित्वम्]।

ततो बृहस्पतेः कुडं तीर्थानां तीर्थ 'मुत्तमं।
तस्य पुण्यफलं यत् स्यात् तद् वदामि समासतः॥16॥

अर्थः—इसके बाद तीर्थों में उत्तम तीर्थ बृहस्पतिकुण्ड है (उसमें स्नान करने का) जो पुण्यफल है उसे संक्षेप में बतलाता हूँ।

पाठान्तरम्— a) कुंडे B / c) °फल R/d) वदामि O, वदानि R S ['वदानि' तु दुरुहः पाठः, किन्तु अत्र प्रमादजन्या विकृतिः संभवा, हस्तलेखसाक्ष्यगौरवेण 'वदामि' इति स्वीकृतः]।

यो नरः प्रात 'रुत्थाय स्नानं कृत्वा विधानतः।
नारसिंह 'मथा 'राध्य तस्मिस् तीर्थे महामते॥17॥

अर्थः—हे महामते! जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर इस तीर्थ में विधि विधान से स्नान करके नरसिंह की आराधना करता है (वह स्वर्ग को प्राप्त करता है)।

पाठान्तरम्— c) नरसिंह० B /० राध्यस् R/d) तस्मिंस्ती० O, तस्मस्ती० R^1, तस्मिस्ती०R^2 [अपलिखितं हस्तलेखे]।

गन्धपुष्पादिभिर् नित्यं सत्यवादी जितेंद्रियः।
स वागीशो भवेत् तत्र पुनः स्वर्ग 'मवाप्नुयात्॥18॥

अर्थः—गन्ध पुष्प आदि से नित्य ही नरसिंह भगवान् की आराधना करता है वह वागीश (बृहस्पति के समान) होता है और फिर स्वर्ग को प्राप्त करता है। (यहाँ भी युग्मक है।)

पाठान्तरम्— a) नित्यं BM [RS योः प्रायः द्वित्वप्रवृतिः, M कोशे द्वित्वस्य अभावः, स पुनः संपादककृतः इति संभवः] । d) पुनः O, ततः M [पुनः → ततः? वस्तुतस्तु द्वे अपि समानार्थे]।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दिव्यरत्नविचित्राँगो दिव्याभरणभूषितः।
विमानेनार्कवर्णेन नारसिंहपुरं व्रजेत्।।19।।

अर्थः—(वह मनुष्य) दिव्य रत्नों से विचित्र अङ्गों वाला तथा दिव्य अलङ्कारों से विभूषित होकर सूर्य सदृश तेजोमय विमान से नरसिंहपुर (विष्णुलोक) को प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— b) देव्या० RS [RS योः सनाभिता। पृष्ठमात्रातः, वंगाक्षरतो वा, विकृतिः?] c) °नार्कवर्णेन BM /d) नार० O, नर० BM ['नरसिंहः' तु ऋजुतरः पाठः]।

शतं वर्षसहस्राणि दिव्यया संख्यया ऽनघ।
भुक्त्वा विष्णुपुरे भोग्यान् पुनः सायुज्य 'मान्नुयात्।।20।।

अर्थः—हे अनघ (निष्पाप राजन्)! वह मनुष्य विष्णुपुर में देवताओं की संख्या के अनुसार सौ हजार वर्षों (असंख्य वर्षों) तक वहाँ के भोगों को प्राप्त कर पुनः विष्णु सायुज्य प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— a) शतं O, शत BM ['शत' तु ऋजुतरः पाठः] । c) भोग्यान्=भोग्यान् R, भ्येग्यान् S, भोगान् BM [भोग्यान्=भ्योग्यान्; भोग्यान्→भोगान् (सरलीकरणम्)]।

तस्मात् परतरं राजन् ब्रह्मकुण्ड 'मिति स्मृतं।
तीर्थाना 'मुत्तमं तीर्थं तत् फलं श्रणु आदरात्।।21।।

अर्थः—हे राजन! उस नरसिंह तीर्थ से भी उत्कृष्ट, तीर्थों में उत्तम तीर्थ ब्रह्मतीर्थ को कहा गया है। (अब आप) उसके फल को आदरपूर्वक श्रवण करें।

पाठान्तरम्— 21 ⊙ B [दृष्टिप्लुतिः?] /b) स्मृतं O, श्रुतं M [स्मृतं > सृतं (वंगीय-उच्चारणम्) →श्रुतं?] /d) आदरात् = चाद० RS, ताद० M [असन्धिनिवारणाय पाठान्तरम्। 'शृणुतादरात्' अपि किंचिद् दुरुहत्वाद् मूलार्हः, अत्र किन्तु श्रोतुः एकवचनत्वात् शृणु एव सम्यक् पाठः]।

न विस्तारान् मया वक्तुं शक्यं ते सांप्रतं नृप।
संक्षेपात् कथयिष्यामि तस्य तीर्थस्य यत् फलं।।22।।

अर्थः—(किन्तु) हे राजन्! इस समय मेरे द्वारा आपको विस्तार से नहीं सुनाया जा सकता है। उस ब्रह्मकुण्ड का जो फल है उसे संक्षेप से कहूँगा (आप सुनें)।

पाठान्तरम्— ab) विस्तरान् O, विस्तरात् B [असन्धित्वात् B पाठः एव ज्यायान्, किन्तु 'न' 'त' योः स्वरूपसाम्यात् लिपिप्रमादः अपि संभाव्यः। वक्तुं शक्यं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ते= वक्तुं शक्यते RSB, शक्यं वक्तुं ते M [उपलब्धपाठयोः व्याख्यानाय अत्र निर्माणपाठः। शक्यं ते >शक्यंते→ शक्यते, M कोशे पदव्यत्ययः]। d) तस्या B ।

जितें'द्रिया जितक्रोधा रागद्वेषविवर्जिताः।
ब्रह्मकुंडं समासाद्य ये नराः पर्यु'पासते।
ते मुक्तपापा विप्रें'द्र परां सिद्धि 'मवाप्नुयुः।।23।।

अर्थः—हे विपेन्द्र (यहाँ राजा के लिए ही यह सम्बोधन है) जो मनुष्य इन्द्रियों को तथा क्रोध को वश में करके एवं राग-द्वेष आदि से रहित होकर ब्रह्मकुण्ड के पास जाकर उपासना करता है वह सर्वथा पापमुक्त होकर उत्कृष्ट सिद्धि को प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— a) जितक्रोध B /d) पर्युपासते एतस्य पूर्वे RS योः प्रमादाद् दण्डद्वयं ''।।'' दत्तम्। अनेन अपि RS योः सनाभिता सिद्धतरा। 'पर्युपासते' S कोशे अपलिखितम्] । e) °पापा O, °पाप R, °मुपाय B / विप्रेंद्र O, विप्रेन्द्र M, राजेन्द्र B [विप्रेंद्र इति संबोधनेन दृढ़ं अनुमीयते यत् तीर्थप्रशंसाध्यायः, तस्य श्लोकाः वा, ग्रन्थान्तरेभ्यः आनीताः। द्र. 11 तमश्लोकस्य पाठप्रस्तारः। ग्रन्थ संगतिचेष्टया 'मुक्तपापविप्रेंद्राः' इति पाठसंशोधनस्य चेष्टा अपि अत्र अनुमेया]।

तस्मिन् कुंडे सकृत् स्नात्वा यो नृसिंहं च पूजयेत्।
दि्व्यं विमान 'मारुह्य अप्सरोगण-सेवितः।।24।।

अर्थः—उस ब्रह्मकुण्ड में एक बार (भी) स्नान कर जो मनुष्य नरसिंह भगवान की पूजा करता है वह दिव्य विमान में विराजमान होकर अप्सराओं से सेवित होता हुआ (ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है)।

पाठान्तरम्— b) नृसिंह च M, नृसिंहश्च RS, नृसिंहपय B [अत्रापि RS योः सनाभिता]। c) विमान O, विमानमान S/ °मारुह्य O, °मास्थाय B /d) सेवितः O, संवृतः RS इति लोभनीयः पाठः, परंतु हस्तलेख-साक्ष्यगौरवाद् न गृहीतः] ।

संस्तूयमानो देवैस् तु सिद्धैश् च परमर्षिभिः।
ब्रह्मलोक 'मवाप्नोति ना'त्र कार्या विचारणा।।25।।

अर्थः—देवताओं, सिद्धों और महर्षियों द्वारा स्तुति किया जाता हुआ वह मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है। इस विषय में (सन्देह नहीं) विचारणा नहीं करनी चाहिये।

पाठान्तरम्— a) संस्तूयमानोर् B/ देवैस्तु O, देवैश्च M/d) विचारणा B/

ब्रह्मणा कृतसत्कारो बहुकालं नृपात्मज।
ततो विष्णुपुरं गत्वा पुनः सायुज्य 'माप्नुयात्।।26।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थः—हे नृपात्मज (राजा के पुत्र)! वह मनुष्य ब्रह्मलोक में बहुत दिनों तक आदर सत्कार प्राप्त कर पुनः विष्णुपुर (वैकुण्ठ लोक) में विष्णु सायुज्य प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— a) सत्कारो O, संस्कारो B/b) बहुकालं O, बहुकाले RM [मन्ये, योजनाशक्त्या अभावेन कृतं पाठान्तरम्, 'ततः' अत्र स्थानवाची न तु कालवाची]।

कोटितीर्थे पुनः स्नातस् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥27॥

अर्थः—(इसी प्रकार) कोटितीर्थ में भी स्नान करने से (प्राणी) सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है।

पाठान्तरम्— 26–29 ? B डॉ. बाकरेण न उद्धृताः। a) स्नातस्=स्नातो O, स्नात्वा M/b) नरः पापात् प्रमुच्यते RS [RS योः पाठः संशोधनजन्यः?, कर्तुः विवक्षापूर्तितः 'नरः', अत्र पंचमीविभक्तिः मन्ये संशोधनलब्धा। b–चरणस्य M कोशस्य पाठस्य अस्माभिः ग्रहणाद् अत्र पाठनिर्माणं एव शरणम्; अन्यत्र द्वित्वप्रवृत्तितः। अत्र 'स्नातस्'। स्नात्वा तु सरलीकरणम्; स्नातस् > स्नात→ (i) स्नात्वा; (ii) स्नातः]।

अग्निष्टोमसहस्रेण वाजपेयशतानि च।
कर्तुश् च यत्फलं प्रो'क्तं कोटितीर्थजलाप्लुतः॥
तत् फलं समवाप्नोति सत्य'मेतन् मयो 'दितं॥28॥

अर्थः—सहस्रों अग्निष्टोम यज्ञ करने वाले को, सैकड़ों वाजपेय यज्ञ करने वाले को जो फल कहा गया है उन सभी फलों को कोटितीर्थ में स्नान करने वाला प्राणी प्राप्त कर लेता है–यह मेरे द्वारा सत्य कहा जा रहा है।

पाठान्तरम्— –?–B/a) सहस्राणि O, हेसेस्राणि S / b) वाजयेय S/c) कर्तुश् O, क्रतोश् RS [M पाठः संशोधनकृतः प्रतीयते, न तेन विना किन्तु अवकाशः]।

सुवर्णदान–गोदान अन्नदानेषु यत् फलं।
तत् फलं समवाप्नोति कोटितीर्थजला'प्लुतः॥29॥

अर्थः—सुवर्णदान, गोदान और अन्नदान करने का जो फल होता है वे सभी फल कोटि तीर्थ में स्नान करने वाले को प्राप्त हो जाते हैं।

पाठान्तरम्— –?–B /a) गोदान M/ गोंदान S, मोदान R/b) अन्न० R, अत्र S ? धान्य M [असन्धिनिवारणाय इदं पाठान्तरम्, समासे अपि असन्धिः न पाणिनीयविरुद्धः, द्र. भूमिका, अनु. 3.7.13.]।

ततः सप्तर्षितीर्थं तु परमं ऋषिसेवितं।
तस्मिन् तीर्थे नरः स्नात्वा ब्रह्मलोके महीयते॥30॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थः—इसके अनन्तर ही ऋषियों द्वारा सेवित महान् सप्तर्षि तीर्थ है। उस तीर्थ में स्नान करके मनुष्य ब्रह्मलोक में पूजित होता है।

पाठान्तरम्— —? B/a) तु O, च B/b) परममृषि॰ M, [असन्धिविषये तु द्र. भूमिका 3.7.0; तुल. श्लो. 4/ सन्धिकृते M पाठे छन्दःप्रवाहभंगः अपि भूयेत। M कोशस्य ससन्धिपाठः M हस्तलेखे स्थितः, अथ वा, आधुनिकेन ग्रन्थसम्पादकेन कृतः, तन्न शक्यं वक्तुम्]। c) तस्मिंस्तीर्थे M ।

ततः परं प्रवक्ष्यामि स्वर्गद्वारं महापदं ।
सर्व्वदुःखक्षयकरं सर्व्वशान्तिकरं परं ॥31॥

अर्थः—इसके बाद सभी प्रकार के दुःखों का नाश करने वाले एवं सभी प्रकार से शान्ति प्रदान करने वाले सभी तीर्थों में उत्कृष्ट महापद (स्वरूप) स्वर्गद्वार तीर्थ को बतलाता हूँ।

पाठान्तरम्— a) ततः O, अतः B/ b) स्वर्गद्वारं M, स्वर्गद्वार R S B? [पुरस्ताद् द्रष्टव्यम्]। डॉ. बाकरेण b c चरणयोः B हस्तलेखे पाठः इत्थं निदर्शितः— 'सर्वदुष्टवखक्षयकरं शिर्वम्' hiatus। अत्र haituns पदेन किं विवक्षितमिति अस्पष्टम्, इदं पाठान्तरमपि c d चरणयोः प्रतीयते। मन्ये b चरणः दृष्टिप्लुत्या लुप्तः]। सर्व्व R S, सर्व M/d) परं = परम् M, शिवं R S [पा. व्या. परं > ⊙ (दृष्टिप्लुतिः) → शिवं (पूर्तिः)]।

यत् तीर्थं मुनिभिर्देवैः पुरंदरपुरोगमैः।
अप्सरोगणसंयुक्तैर् गंधर्व्वै किन्नरैस् तथा॥32॥

अर्थः—जो स्वर्गद्वार तीर्थ इन्द्र प्रभृति देवताओं, मुनियों तथा अप्सराओं सहित गन्धर्वों और किन्नरों से सेवित रहता है।

पाठान्तरम्— a) देवैः B M/d) गन्धर्वैः B M ।

यक्षैर् विद्याधरगणैः सेव्यमानं समंततः।
तस्य तीर्थस्य यत् पुण्यं तत् फलं कथयामि ते॥33॥

अर्थः—यक्षों विद्याधरों से पूर्ण रूपेण सेवित है उस (स्वर्गद्वार) तीर्थ का जो पुण्य फल है उसे मैं कहता हूँ। (यहाँ 32 एवं 33 पद्य युग्मक हैं)।

पाठान्तरम्— b) समंहतः R।

न विस्तारान् मया वक्तुं शक्यं तस्य फलं नृप।
तस्मात् संक्षेपतो वक्ष्ये समाहितमनाश् शृणु॥34॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थः—हे राजन्! उस (स्वर्गद्वार) तीर्थ की महिमा (फल) मेरे द्वारा विस्तार से नहीं कही जा सकती। अतः मैं संक्षेप में उन्हें कहता हूँ। समाहित चित्त होकर आप सुनिये। ('समाहितमनाः' विशेषण वक्ता और श्रोता दोनों में लग सकता है।)

पाठान्तरम्— a) विस्तारान् M/d) मनाश् = मना R S, मनाः B M ।

कपिलां लक्षणो'पेतां सवत्सां गां पयस्विनीं।
ब्राह्मणाय दरिद्राय श्रोत्रिया'हिया'ग्नये।।35।।

अर्थः—कपिला गौ के लक्षणों से युक्त सवत्सा पयस्विनी (दूध देने वाली) गौ को श्रोत्रिय (वेद पढ़ाने वाला ब्राह्मण), अहिताग्निक (अग्निहोत्रीब्राह्मण) तथा निर्धन ब्राह्मण विद्वान् को (दिया जाता है)।

पाठान्तरम्— a) लक्षणोयेतां S ? b) पयस्विनीं O, पयस्वीनाम् B [B कोशस्य मूलादर्शे न पृष्ठमात्रायाः प्रयोगः इति व्यज्यते]। d) O यायहिताग्नये B ।

टिप्पणी—श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ (अमर.2-7-6) श्रीत्रियंश्छन्दोऽधीते इति वा श्रोत्रियन्निपात्यते। गृहे अग्न्याधानकर्ता। अग्निहोत्री-अग्निमचैषीत् इति वाऽर्थः बोद्धव्यः।

यो दद्याद् विदुषे विद्वान् यत् फलं ना'न्त 'मुच्यते।
तत् फलं सम'वाप्नोति स्वर्गद्वारे जला'प्लुतः।।36।।

अर्थः—तथा हे विद्वन्! विद्वान् को भी जो दिया जाता है उसका अनन्त फल प्राप्त होता है। उन सभी फलों को स्वर्गद्वार में स्नान करने वाला प्राप्त कर लेता है।

पाठान्तरम्— a-b) O R S [अनेन विना अर्थग्रहणं न सम्भवम् । अत्रापि R S योः सनाभिता] । b) = स न याति यमक्षयं B/c) समवाप्नोति O, सर्वमाप्नोति M/d) स्वर्गा० S, स्वर्गद्वार B M [स्वर्ग > स्वर्गा। अत्र अस्माभिः अलुक्समासः ऊहितः स्वर्गद्वारे उपस्थितं जलं तेन आप्लुतः इति। जलप्लुतः B । डॉ. बाकरस्य संस्करणेन M कोशस्य पाठः 'जलाप्लुतः' अनुमीयते। अस्माकं तीर्थप्रकाशस्य पुस्तके 'जलाप्लुतः' एव। अत्र तुल. 28 श्लोके 'जलाप्लुतः']।

नरः प्रत्यु'षसि स्नात्वा स्वर्गद्वारे महामते।
तत्र विष्णुं प्रतिष्ठाप्य नारसिंह 'मनामयं।।37।।

अर्थः—हे महामते! जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर स्वर्गद्वार तीर्थ में स्नान करके तथा नरसिंह स्वरूपधारी अत्यन्त पावन विष्णु भगवान की प्रतिदिन स्थापना तथा पूजन कर भक्ति करता है वह इस देह का त्याग कर वैष्णव पद प्राप्त करता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठान्तरम्— a) प्रत्यूषसि B, मूले धृतपाठः प्रत्यूषसि; न च किमपि पाठान्तरं दत्तम्, तत् सर्वं चिन्त्यमत्र।

पूजयित्वा हरौ भक्ति 'मुद्वहन् संयर्ते'न्द्रियः।
त्यक्त्वा देहं नृपश्रेष्ठ प्राप्नुयाद् वैष्णवं पदं॥38॥

अर्थः—हे नृपश्रेष्ठ! संयत इन्द्रिय होकर श्रीहरि का भक्तिपूर्वक ध्यान करता हुआ अपने पार्थिव शरीर का त्याग करता है तो वह वैष्णव पद को प्राप्त करता है। (यहाँ भी 37-38 पद्य युग्मक हैं)।

पाठान्तरम्— b) उद्वहन् O, उद्वाहन् B। संयर्तेंद्रियः R, संयतद्रियः S, °तेन्द्रियः M, विजेन्द्रियः B/d) वैष्णवं पदमाप्नुयात् B [उपलब्धपाठान्तराणां व्याख्यानाय अत्र निर्माणपाठः, असन्धिनिवारणमेव पाठान्तरे हेतुः]।

यः स्मरेत् प्रातरु'त्थाय स्वर्गद्वारं नराधिप।
सर्व्वपापविशुद्धात्मा स गच्छेत् परमं पदं॥39॥

अर्थः—हे राजन्! प्रातःकाल उठकर जो स्वर्गद्वार तीर्थ का स्मरण करता है वह सभी पापों से रहित होकर विशुद्धात्मा मनुष्य परमपद को प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— a) ∃ (प्र[1]) नरसिहमनामयं पूजयित्वा हरे देवं B [डॉ. बाकरेण 'हरिं' इति अनुमितम्। हरिं > हरे, वंगीयलिपि, पृष्ठमात्राप्रयोगस्य परिणामः, द्र. भूमिका। केवलं द्वारमेव 'स्मरेत्' इति क्रियायाः कर्म इति अनहँ मत्वा इदं प्रक्षिप्तम्? b) नराधिपः B/e) सर्वं B M/d) परमं पदं O, परमां गतिम् M।

यस्मिन् वहति संयुक्ता सरयूर् घर्घरेण तु।
तत् संगं उत्तमं तीर्थं गङ्गायमुनयोर् यथा॥40॥

अर्थः—जहाँ (स्वर्गद्वार में) घर्घरा नदी से संयुक्त सरयू नदी बहती है। वह गङ्गा और यमुना के संगम की तरह (घर्घरा और सरयू) संगम उत्तम तीर्थ है।

पाठान्तरम्— a) वहति O, वहंति R S, नहति B/ b) सरयूर् O, सरयू R S [लेखसाक्ष्यगौरवस्तु 'सरयू' पाठस्य पक्षे, किन्तु व्याकरणदृष्ट्या अशुद्धः; श्रुतलेखनादयं प्रमादः, अक्षरावृत्त्या ('र्घ र्घ' वा भ्रमः। c) संगंउत्तमं = संगमुत्तमं M, सर्गं तु महत् B R, सर्गं तु मह S [गृहीतपाठस्तु निर्माणपाठः, असन्धिनिवारणाय पाठान्तरम्। ससन्धिपाठे छन्दसः प्रवाहभंगः। द्र. भूमिका] d) यमुनयो B [यमुनयो इत्यत्र 'र्' भ्रंशः, —मूले असन्धिः ('यमुनयोः') वा]।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बालखिल्या'श्रितं तीर्थं सर्व्वपातकनाशनं।
ततः स्नात्वा नरो गच्छेद् ब्रह्मलोकं सनातनं।।41।।

अर्थः—इसके अनन्तर सभी प्रकार के पापों को नष्ट करने वाला बाल्यखिल्य नामक तीर्थ हैं जहाँ स्नान करके मनुष्य सनातन ब्रह्मलोक को प्राप्त कर लेता है।

पाठान्तरम्— 41 ? B [चर्चितः अयं श्लोकः किन्तु न उद्धृतः बाकरेण। द्र. भूमिका]। a) **बालखिल्याश्रितं** O, लक्षिम्याश्रमं R, लक्षिमित्याश्रमं S [डॉ. बाकरेण B कोशे परिगणितेषु तीर्थेषु 'बालखिल्यतीर्थं' इति नाम उल्लिखितम् (अ. प्र. I.132), तत्र 'बालखिल्याश्रमं' 'बालखिल्याश्रितं' वा इति न ज्ञायते। 'बा' अक्षरस्य भ्रंशाद् लक्षिम्याश्रमं पाठः कल्पितः, अक्षरन्यूनत्वेन 'S' कोशे संशोधितः। R S योः तीर्थानां वैष्णवीकरणमपि सम्भाव्यम्, तुल. श्लो. 41]/ b) सर्वं M / c) गच्छेत् O, गच्छेद् M/ ततः=तत O, तत्र M [B पाठः अज्ञातः, M पाठः सम्पादकेन संशोधितः भवितुं अर्हति—तुल–12a]।

बिल्वतीर्थं'मिति ख्यातं शङ्करायतनं महत्।
तत्र शङ्कर 'मभ्यच्चर्य्य स्नानं कुर्यात् तु यो नरः।।
रुद्रलोक'मवाप्नोति विमानेन विराजतः।।42।।

अर्थः—बिल्वतीर्थ भगवान् शङ्कर का महान् निवास स्थान है। वहाँ जो मनुष्य स्नान करके भगवान् शिव की पूजा करता है वह विमान पर विराजित होकर रुद्रलोक को प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— a) बिल्व O, विष्णु R S [सरलीकृतः विष्णुतीर्थं इति पाठः, तीर्थानां वैष्णवीकरणं वा तुल. 41। 'बिल्वतीर्थ, तु दुरूहपाठः, अज्ञानात् सरलीकृतः। अत्रापि R S योः सनाभिता। इदं एव तीर्थं परवर्तिपरम्परासु 'बिल्वहरि' नाम्ना स्मृतं (द्र. डॉ. बाकरः II: 62) तत्रापि वैष्णवीकरणस्य प्रवृत्तिः। तुल. पुराणं, तत्र अपि इदमेव तीर्थं निर्दिष्टम्?] °मिति °मति B/c) °मभ्यच्चर्य्य=मभ्यर्च्य R S, मभ्यर्च्य M /d) कुर्यात् O, कृत्वा B [बाकरेण B पाठः एव मूले धृतः, तत् चिन्त्यम्। f) °जता M, जत B, जतः O [मन्ये आकारः दण्डद्वयेन व्यतिभ्रान्त्या भ्रंशितः]।

ततो गालवतीर्थे'द्र 'मुत्तमं भुवि विश्रुतं।
तत्र स्नात्वा दिवं प्राप्य गच्छति ब्रह्मणः पदं।।43।।

अर्थः—इसके पश्चात् पृथ्वी पर विख्यात तीर्थराजों में उत्तम, गालवतीर्थ में स्नान करके मनुष्य ब्रह्म पद दिव्लोक को जाता है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पाठान्तरम्— 43 ? B [चर्चितौ, किन्तु न उद्धृतौ बाकरेण द्र. भूमिका]। a) गालव O, शालव R [डॉ. बाकरेण B कोशस्य तीर्थेषु 'गालव' इति नाम परिगणितम्। द्र.I.132)]। d) गच्छति=गछति O, गच्छन्ति M [मन्ये अक्षरस्य उपरि द्वित्वचिह्नं अनुस्वारं मत्वा कृतं पाठान्तरम्] ब्रह्मणः पदं O, ब्रह्मनिष्कलं M [ब्रह्मनिष्कलं 'इत्येव ग्राह्यः पाठः; दुरुहत्वात्। किन्तु निर्वाणप्राप्तिः; ब्रह्मप्राप्तिः वा, एतस्य ग्रन्थस्य वैष्णवप्रवृत्या अनुकूला न वा इति विचारणीयोऽयं विषयः]।

गोमत्यां रामतीर्थे तु यो नरः स्नान-'माचरेत्।
तत्र विष्णुं प्रतिष्ठाप्य गन्धपुष्पादिभिः क्रमात्।।
आराध्यसिद्धि 'माप्नोति स नरो ना'त्र संशयः।।44।।

अर्थः—जो मनुष्य गोमती के रामतीर्थ में स्नान करे तथा वहीं विष्णु की स्थापना कर गन्धपुष्पादि से क्रमशः आराधन करे तो वह मनुष्य अवश्य ही सिद्धि प्राप्त करता है, इसमें संशय नहीं है।

पाठान्तरम्—44-? B/a) गोमत्यां O, गोमत्या S/c) प्रतिष्ठाप्य M, समाराध्य O ['प्रतिष्ठाप्य' दुरूहपाठः, 'समाराध्य' पाठे पुनरुक्तिरपि। 'समाराध्य' अनेन पूर्वप्रतिष्ठितः विग्रहः विवक्षितः, 'प्रतिष्ठाप्य' अनेन पूजकेन मृत्तिका, धातुभिः वा, तीर्थयात्रिभिः पृथक् पृथक् विग्रहनिर्माणं, न किन्तु मन्दिरनिर्माणं व्यञ्जितम्। इदं प्राचीनं विधानं प्रायेण तीर्थमाहात्म्येषु दृश्यते। एतद् अज्ञात्वा एव 'समाराध्य' इति संशोधनम्।

जटाकुंड 'मिति ख्यातं सर्व्वपापहरं शुभं।
तत्र स्नात्वा च पीत्वा च ब्रह्मलोके महीयते।।45।।

अर्थः—सभी पापों का हरण करने वाला शुभप्रद जटाकुण्ड नाम से प्रसिद्ध तीर्थ में स्नान करके और उस तीर्थ के जल को पीकर मनुष्य ब्रह्मलोक की महिमा को प्राप्त करता है।

पाठान्तरम्— b) सर्व्वं O, सर्व B M।

तीर्थानि पुण्यानि मया'धुना ते
प्रो'क्तानि राजन् भुवि विश्रुतानि।
शृण्वंति ये तानि नरावराणि
ते यांति विष्णोः पदमत्यु'दारं।।46।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अर्थः—हे राजन्! सम्प्रति मैंने पृथ्वी पर प्रसिद्ध पुण्यमय तीर्थों का वर्णन किया। जो अधम मनुष्य भी उन प्रसिद्ध तीर्थों का श्रवण करते हैं वे विष्णु भगवान् के उदार परम पद को प्राप्त करते हैं।।

पाठान्तरम्— श्लो. 46 ? M [मित्रमिश्रेण न उद्धृतः]। b) राजन् O, रजन् B/d) विष्णोः O, विष्णो B/ °मत्युदारं O, °त्पुदारं B ['पु' इति 'यु' इत्यस्य एव लेखनदोषः, मकारः तु भ्रंशितः]।

इति श्रीनारसिंहपुराणे आद्ये धर्म्मार्थकाममोक्षप्रदायिनि परब्रह्मस्वरूपिणि।।

अर्थः—इस प्रकार श्रीनारसिंहपुराण के आदि में धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष प्रदान करने वाले परब्रह्मस्वरूप में .....

पाठान्तरम्—नृसिंह० B। धर्मार्थ B। परं ब्रह्म R S ['पुराणे आद्ये' अत्र त्रिषु कोशेषु असन्धिः एव दृश्यते। डॉ. बाकरेण मृषैव 'आद्य' इति मूलपाठः ऊहितः, 'आद्ये' एव शुद्धः]। प्रदायिनी B। स्वरूपिनी B ['न' 'ण' योः व्यतिभ्रान्तिः मूले वंगीयलिप्याः प्रयोगेण किम् ?]। मित्रमिश्रेण पुष्पिका न उद्धृता, स्वाभाविकं च तत्। R S कोशयोः सम्पूर्णा अपि पुष्पिका एकप्रवाहेण लिखिता। अस्माभिः पाठप्रदानाय, हस्तलेखे प्रयुक्तानां दण्डानां प्रमाणेन च, पंक्तिशः खण्डिता]।

इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायणः सदा।। न वासुदेवात् पर 'मस्ति किञ्चित्।।'

अर्थः—ये एकमात्र नारायण ही सभी प्रकार से परिपूर्ण और ध्येय हैं। वासुदेव से अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

पाठान्तरम्—⊙ B [इयं मन्त्रात्मिका पंक्तिः R S योः नरसिंहपुराणस्य प्रायेण सर्वेषु अध्यायेषु दृश्यते]।

तीर्थप्रशंसा नाम सप्तचत्वारिंशत्तमो'ध्यायः।

अर्थः—तीर्थप्रशंसा नामक सैंतालीसवां अध्याय।

पाठान्तरम्—प्रशंसा O, पदशंसा B। नामा R B। चत्वारिंशत्तमो O, चत्वारिंशतमो S, ⊙ B।

❑❑❑

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri